स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान के निदेशक का संबोधन

संस्थान के सभी कर्मचारी, उनके परिवारजन एवं बच्चों ! आप सबको भारत के स्वतंत्रता दिवस की 56वीं वर्षगाँठ पर हार्दिक शुभकामनाएं ।

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित प्रोफ़ेसर अमर्त्य सेन ने कहा है कि विकास के बिना आजादी परिपूर्ण नहीं है । यह हर्ष का विषय है कि बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक विपदाओं, कहीं-कहीं राजकीय अस्थिरता, सीमा पर आतंकवाद इन सबके बावजूद भारत अन्य विकासशील देशों की तुलना में सभी क्षेत्रों में अग्रगामी है ।

पिछले कुछ दशकों में आम आदमी के जीवन स्तर में सराहनीय बृद्धि हुई है । शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय प्रगति हुई है । इस संदर्भ में भारत में विश्व बैंक (World Bank) के प्रतिनिधि माइकेल कार्टर (Michael Carter) ने कहा है कि भारत की आर्थिक प्रगति ने विश्व के कई ताकतवर देशों को चकित कर दिया है ।यह प्रगति देश के किसान, मजदूर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, प्रशासक, प्रबंधक, बुद्धिजीवी और दूरदर्शी राजनयिकों के अथक और निरन्तर परिश्रम के कारण संभव हो पाई है ।

इन सभी सफलताओं के बीच अभी भी एक क्षेत्र ऐसा है, जिसमें प्रगति की अत्यन्त आवश्यकता है । वह है स्वास्थ्य । विश्व में भारत में अधिकांश जनता जल द्वारा संक्रमित रोगों से पीड़ित है । असुरक्षित पानी एवं शौच से संबंधित समस्याएं विकासशील देशों में 80S बीमारियों का कारण बन रही हैं । भूजल के अति दोहन के कारण भूजल का स्तर घट रहा है । इसके चलते अधिकांश जनता अपशिष्ट जल को पीने के लिए विवश है ।

मननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है - ''जल जीवन का आधार है । हम सबको मिलकर पानी का अभाव और उससे जुड़ी समस्याओं का समाधान करना होगा ।''

पानी प्रत्येक को प्रभावित करता है । इसलिए पानी की उपलब्धता, उसकी गुणवत्ता को समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए चिंता का विषय होना अनिवार्य है । इसी पृष्ठभूमि में वर्ष 2003 को United Nations ने 'Year of Fresh Water/ स्वच्छ जलवर्ष' घोषित किया है । भारत सरकार और हमारे जलसंसाधन मंत्रालय ने भी इसके अनुरुप वर्ष 2003 को स्वच्छ जल वर्ष के रुप में मनाने का निर्णय लिया है । इससे जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत 22 अगस्त, 2003 को राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ने एक कार्यक्रम का आयोजन किया है। आशा है कि आप इस कार्यक्रम को सफल बनाने में शतत योगदान देंगे । अंत में रहीम का दोहा प्रस्तुत है:-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून,
पानी गए न उबरे, मोती मानुस चून ।

*****